17 अक्टूबर 2008, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/ आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अपने में से अपनापन खो जाना ही अनन्त दु:खों का कारण है और अपने में अपनापन हो जाना ही अनन्त सुख का कारण है।

ह्न आत्मा ही है शरण : पृष्ठ ह्न 46

वर्ष : 31, अंक : 14 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ग्यारहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन बापूनगर में दिनांक 5 से 14 अक्टूबर, 08 तक ग्यारहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन रविवार, 5 अक्टूबर को प्रात: श्री प्रकाशचंदजी घीसालालजी छाबड़ा, सूरत के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अभयकरणजी सेठिया, सरदारशहर के अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट अतिथी एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका भी मंचासीन थे।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती सूरजदेवी धर्मपत्नी श्री जमनालालजी सेठी जयपुर तथा आमंत्रणकर्त्ता श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री राजमलजी अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता थे।

शिविर के परम सहायक बनने का सौभाग्य श्रीमती मंजुलाबेन कविनचंद्र परीख मुम्बई तथा श्री मुकेशजी जैन देवलाली/इन्दौर को मिला।

सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर व प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ़ परिवार के करकमलों से किया गया। फिल्म प्रोजेक्टर का उद्घाटन श्रीमती इन्द्राबेन जयन्तीभाई दोशी ने किया।

इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की बहुमुखी गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। अन्य विशिष्ट अतिथियों के उद्बोधन के उपरान्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में वर्तमान समय में आध्यात्मिक शिविरों की उपयोगिता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना से लेकर आजतक चल रही गतिविधियों का उद्देश्य एकमात्र तत्त्वप्रचार ही बताया साथ ही ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष स्व. श्री पूरणचंदजी गोदिका के समर्पण एवं तत्त्वप्रचार की भावना का स्मरण दिलाते हुये संस्था की रीति-नीति से जनसामान्य को अवगत कराया।

सभा का संचालन व आभार प्रदर्शन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया तथा मंगलाचरण अंकित शास्त्री लूणदा ने किया।

शिविर में प्रतिदिन के कार्यक्रमों की शुरुआत गुरुदेवश्री के परमात्मप्रकाश ग्रंथ की गाथा 130 पर हुये सी.डी. प्रवचनों से होती थी।

मुख्य प्रवचन ह्न शिविर में प्रतिदिन सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज की गाथा 34 वीं से 37 तक मार्मिक प्रवचन हुये। आपके प्रवचन से पूर्व एक-एक दिन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि कालीन मुख्य प्रवचनों में पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला। आपके प्रवचनों के पूर्व एक-एक प्रवचन पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित फूलचंदजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन का हुआ।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त महाविद्यालय के छात्र विद्वानों के विविध विषयों पर प्रवचन हुये।

शिक्षण कक्षायें ह्न पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा षट्कारक, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली द्वारा नयचक्र (व्यवहारनय प्रश्नोत्तर), पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी द्वारा प्रवचनसार (गाथा-80), पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा तत्त्वार्थसूत्र (अध्याय ह्न6), पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा जिनधर्म प्रवेशिका एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री द्वारा चार अभाव विषय पर कक्षायें ली गईं।

प्रौढ कक्षा (प्रात: ५-३० बजे) ह्न पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा का लाभ मिला। **(शेष पृष्ठ 3 पर ...)**

सम्पादकीय - 16

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

इन पुण्य-पाप के फल से प्राप्त आकुलताजन्य सुखों-दुःखों से छुटकारा पाने की प्रथम सीढ़ी सम्यग्दर्शन है, अब वही विषय चलेगा, उसे ध्यान से सुनें और तुम्हें आनंद आये तो अगले प्रवचनों में अपने मित्रों और परिवार को भी साथ अवश्य लायें।

देखो, जिनागम में सम्यग्दर्शन के चार लक्षण कहे हैं ह्न

प्रथम ह्न तत्त्वार्थ श्रद्धान रूप सम्यग्दर्शन।

दूसरा ह्न पर और पर्याय से प्रथक् आत्म-श्रद्धान रूप सम्यग्दर्शन।

तीसरा ह्न शुद्धात्मानुभूति अर्थात् अभेद, अखण्ड एक चिन्मात्र ज्योति स्वरूप कारण परमात्मा की अनुभूतिरूप सम्यग्दर्शन।

चौथा ह्न तीन मूढ़ता रहित सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का यथार्थ श्रद्धानरूप सम्यग्दर्शन।[१]

यद्यपि ये जो चार लक्षण कहे, उनमें सच्ची दृष्टि से एक लक्षण ग्रहण करने पर भी चारों लक्षणों का ग्रहण हो जाता है, तथापि मुख्य प्रयोजन भिन्न-भिन्न विचार कर अन्य-अन्य प्रकार लक्षण कहे हैं।

१. 'तत्त्वार्थश्रद्धान'[२] लक्षण का प्रयोजन तो यह है कि ह्न यदि इन सातों तत्त्वों को पहचान लें तो वस्तु के यथार्थ स्वरूप का व अपने हित-अहित का श्रद्धान हो। जैसे कि ह्न जीवतत्त्व को ध्येय एवं अजीव को ज्ञेय जाने, आस्रव-बंध को हेय माने, संवर-निर्जरा को एकदेश उपादेय और मोक्ष को पूर्ण उपादेय मानकर श्रद्धा करें।

२. 'आपापर' के श्रद्धान का प्रयोजन यह है कि ह्न मुख्य रूप से मैं जीव हूँ, शरीर अजीव है दोनों भिन्न-भिन्न हैं। दोनों के बीच अत्यन्ताभाव रूप वज्र की दीवाल है। अतः शरीर से जीव को सुख-दुःख नहीं होता ह्न ऐसा जानकर अत्यन्त निकटवर्ती शरीर से जब राग एकत्व टूटेगा तो शरीर से संबंधित पर संयोगों से अपनापन कम हो ही जायेगा।

३. जहाँ **'आत्म श्रद्धान'** लक्षण कहा ह्न वहाँ 'पर' से भिन्न आपको (स्वयं को) ही आप रूप जानने की बात है। इससे सम्पूर्ण पर और पर्याय के विकल्प टूट जाते हैं। शुद्ध आत्मानुभूति हो जाती है। वस्तुतः सम्यग्दर्शन का यह स्वरूप ही कार्यकारी है।

४. तथा जहाँ **'सच्चे देव-गुरु-धर्म का श्रद्धान'** सम्यग्दर्शन का लक्षण कहा है, वहाँ बाह्य साधन निमित्तों की प्रधानता से कथन किया है; क्योंकि अरहंत देवादिक का श्रद्धान ही सच्चे तत्वार्थश्रद्धान का कारण है। अतः बाह्य कारण की अपेक्षा से कल्पित कुदेवादिक का श्रद्धान छुड़ाकर सुदेवादिक का श्रद्धान कराने के लिए सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के श्रद्धान को सम्यक्दर्शन का लक्षण कहा है।

मिथ्यात्व के उपशमादि होने पर जहाँ विपरीताभिनिवेश का अभाव होता है, वहाँ चारों ही लक्षण युगपत् पाये जाते हैं? यद्यपि ज्ञानोपयोग में नाना प्रकार के विचार होते हैं, इसके कथन में सापेक्षपना पाया जाता है वस्तु का श्रद्धान तो निर्पेक्ष ही होता है, उसका कथन सापेक्ष होता है।[१]

उक्त चारों लक्षणों में तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण मुख्य है; क्योंकि इस लक्षण में चारों ही लक्षण समाहित हैं; अन्य लक्षणों में चारों का समावेश नहीं होता। जैसे कि सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के श्रद्धान लक्षण में इतना ही भासित होता है कि अरहंतादि को ही सच्चा देव मानना, रागी द्वेषी-देवों को सच्चा देव नहीं मानना।

इसीप्रकार आपापर के श्रद्धान में मात्र यही भासित होता है कि आपापर को ही जानना, यही सम्यक् है। यहाँ शेष को गौण किया गया है।

आत्मश्रद्धान लक्षण में ऐसा मान लें कि आत्मा ही का विचार कार्यकारी है, इसी से सम्यक्दर्शन होता है, वहाँ भी जीव-अजीव के विशेष भासित न हों तो भी मोक्षमार्ग के प्रयोजन की सिद्धि में बाधा नहीं है। अतः तत्वार्थश्रद्धान सम्यक्दर्शन लक्षण को मुख्य रखा है।

तत्त्वार्थ का निर्णय करने के लिए स्याद्वाद शैली में लिखे गये अनेकान्त के प्ररूपक शास्त्रों का स्वाध्याय करना होगा। वे शास्त्र सर्वज्ञ (अरहंत) देव की वाणी को सुनकर गणधर देवों द्वारा निरूपित हैं, उन्हें समझने के लिए निर्ग्रन्थ ज्ञानी गुरु ही परम शरण हैं अतः देव एवं गुरु की शरण में जाकर सर्वप्रथम तत्वार्थ को समझें, एतदर्थ सर्वज्ञ का स्वरूप समझना भी अनिवार्य है।

कुन्दकुन्द स्वामी ने प्रवचनसार गाथा ८० में लिखा है ह्न

'द्रव्य गुण पर्याय से, जो जानते अरहंत को।
वे जानते निज आत्मा, दृग मोह उनका नाश हो।।

जो अरहंत को द्रव्य से, गुण से और पर्याय से जानते हैं, वे वास्तव में आत्मा को भी जानते हैं; क्योंकि दोनों में कोई अन्तर नहीं हैं। ऐसा ज्ञान होने पर उनका मोह अवश्य क्षय हो जाता है। अतः आत्महित के लिये सर्वप्रथम सर्वज्ञ (केवलज्ञानी) के स्वरूप का निर्णय करें।'

हम जिनका उपदेश सुनते हैं और जिनके बताये मार्ग पर चलना चाहते हैं, जिनके दर्शन, पूजन कर हम कृतार्थ होना मानते हैं, ऐसे अरहंत की पहचान यदि हमें नहीं है तो हम बिना जाने/पहचाने किसके दर्शन करते हैं? क्या यह विचारणीय बात नहीं है?

देव शास्त्र-गुरु को जानकर अपने स्वरूप को जानने/पहचानने को ही सम्यग्दर्शन कहते हैं। अतः सम्यग्दर्शन के लिए सर्वज्ञ को जानना अनिवार्य है और यह बिल्कुल कठिन नहीं है। अत्यन्त सरल है; क्योंकि अभी सर्वप्रकार के साधन सुलभ हो गये हैं। इनका बार-बार मिलना अत्यन्त दुर्लभ है। यदि इस भव में आत्मानुभव नहीं हुआ तो फिर कभी होने की संभावना नहीं है। अतः सब कार्यों को गौण करके सर्वप्रथम सर्वज्ञ को जानकर उनकी श्रद्धा करें। भेदज्ञान अर्थात् निजपर की पहचान करें, क्योंकि यह ही मोक्ष का साधन है। समयसार कलश में कहा भी हैह्न

'भेद विज्ञानतः सिद्धाः सिद्धाः ये किलकेचन।
अस्यैवाभावतो बद्धा बद्धा ये किल केचन।।[१]

तात्पर्य यह है कि जबतक भेदविज्ञान नहीं होता तब तक जीव कर्मों से बंधता ही रहता है।

मूलतः संसार में भटकने की चार भूलें हैं ह्न पर में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व। जब तक ये भूलें नहीं निकलतीं तबतक कठोर से कठोर बाह्य धर्म की साधना करो; परन्तु वह साधना कर्म बंधन से मुक्त नहीं करा सकती। यह जानकर जैसे बने तैसे सर्वप्रथम ये भूलें मिटानी होंगी। एकत्व एवं ममत्व मिटाने के लिए वस्तुस्वातंत्र्य का सिद्धान्त समझना होगा। भोक्तृत्वभाव का अभाव करने हेतु यह जानना होगा कि पर में सुख है ही नहीं तो मिलेगा कहाँ से?

बस, दर्शनाचार के संदर्भ में जो सम्यग्दर्शन की चर्चा की; यदि इतना भी जान लिया तो सम्पूर्ण जिनवाणी का रहस्य जानने में आ जायेगा।

पंचाचार के विषय को आगे बढ़ाते हुए संक्षेप में ज्ञानाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार की चर्चा भी आचार्य श्री ने की। जो इस प्रकार है।

(२) ज्ञानाचार समझाते हुए आचार्य श्री ने कहा ह्न ''शुद्धात्मा आधि, व्याधि एवं उपाधि से रहित स्वभावी है। अपनी ज्ञान पर्याय द्वारा स्व को ज्ञेय बनाना तथा भेदज्ञान द्वारा राग-द्वेष से ज्ञानस्वभावी आत्मा को भिन्न जानना निश्चयसम्यग्ज्ञान है एवं व्यवहार से आगमज्ञान सम्यग्ज्ञान है। आत्मा का स्वसंवेदन निश्चय सम्यग्ज्ञान है। 'अपने निज ज्ञायकस्वभाव का निर्णय करते ही शरीर, कर्म, राग इत्यादि कोई भी मुझमें नहीं है' ह्न ऐसा नास्तिरूप परिणमन सहज ही हो जाता है। 'मैं अपने से हूँ ह्न ऐसा अभेदरूप परिणमन होते ही पर से नास्तिरूप परिणमन होता है।' सम्यक्दृष्टि को शास्त्रों का ज्ञान भी शुद्धात्मा के लक्ष्यपूर्वक ही होता है। वास्तव में तो अपने ज्ञायकस्वभाव का स्वसंवेदनरूप परिणमन निश्चय ज्ञानाचार है।''

(३) ''आत्म द्रव्य के आश्रय से ज्ञायकस्वरूपी आत्मा में स्थिरता पूर्वक अतीन्द्रिय आनन्द के निश्चय से होना ही चारित्राचार है। तथा ऐसी स्थिरता के साथ जो बाह्याचार रूप प्रवृत्ति होती है वह व्यवहार चारित्र है।

(४) परद्रव्यों की इच्छा रोकना व्यवहार से तपाचार है तथा जब स्वाभाविक आनन्द के झरने में मस्त आचार्यों को परद्रव्य की इच्छा होती ही नहीं है, वहीं इच्छा अभाव ही निश्चयत्व है। पहले इच्छा के समय जो परद्रव्य निमित्त थे, अब स्वभाव में लीन होने से इच्छा टूटते ही वे परद्रव्य स्वतः छूट जाते हैं। आहार आदि की ओर वृत्ति ही नहीं जाती; अतः अनशन, अवमौदर्य, रस परित्याग, विविक्त शैय्यासन एवं कायक्लेश ये छह बाह्य तप सहज ही पल वे लगते हैं। इन्हें ही बहिरंग तप कहा है, जिसकी ओर लक्ष था, जब उसका लक्ष छूट गया, तब उसकी अपेक्षा से तप की वही संज्ञा हो गई तथा ये बाहर से दिखाई देते हैं, अतः इन्हें बहिरंग तप कहा है।

अनादि से इच्छा बलवान थी, अब उसकी शक्ति समाप्त हो गई और शुद्ध अनाकुल आत्मा की विजय हुई और इच्छारहित साम्राज्य हो गया।

आत्मा इच्छारहित तप से शोभायमान हो गया। यह इच्छारहित तप ही निश्चय तप है।

प्रवचनसार गाथा १४ के अनुसार कहें तो स्वरूप विश्रांतनिस्तरंग चैतन्य आत्मा में प्रतपन निश्चय तपाचार है।

अंतरंग तपाचार के छह भेद हैं ह्न १. प्रायश्चित्त २. विनय, ३. वैयावृत्त्य, ४. स्वाध्याय, ५. व्युत्सर्ग एवं ६. ध्यान।

(५) दर्शनाचार, ज्ञानाचार, चारित्राचार और तपाचार ह्न इन चारों आचारों को टिकाये रखने के लिए अपने अन्तरंग में जो वीर्य/बल स्फुरित होता है वह निश्चय वीर्याचार है।

श्री प्रवचनसार के चरणानुयोग के अधिकार में कहा है कि - 'जबतक व्यवहार के प्रसाद से निश्चय को प्राप्त नहीं करूँ तब तक व्यवहार का पालन करूँगा।' वहाँ ज्ञानाचार व दर्शनाचार को लक्ष्य करके कहते हैं कि 'मैं जानता हूँ, कि हे ज्ञानाचार! हे तपाचार! तू मेरा स्वरूप नहीं है; परन्तु जब तक स्वरूप में स्थिर नहीं रह सकूँ, तब तक तुम्हारा आश्रय है, तुम्हारे निमित्त से ही मैं निश्चय धर्म प्राप्त करूँगा।'

प्रवचनसार के इस व्यवहार कथन का आशय यह है कि ह्न निमित्त है, व्यवहार है; परन्तु जब यह शुभराग भी स्वभाव की रक्षा नहीं करता, तो फिर शारीरिक संहनन, गुरु अथवा अन्य बाह्य वस्तु रूप निमित्त स्वभाव की रक्षा कैसे करें? इसप्रकार निश्चय व्यवहार पंचाचार का स्वरूप है। बस, अभी इतना ही।'' ॐ नमः। ●

(पृष्ठ 1 का शेष...)

विशिष्ट कार्यक्रम ह्न दोपहर में 1:30 से 2 बजे तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन संचालित किये गये। दोपहर में **जैन अध्यात्म को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर पंच दिवसीय **प्रथम राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी** आयोजित की गई।

दिनांक 9 अक्टूबर को श्री टोडरमल स्नातक परिषद का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन रखा गया। 12 अक्टूबर को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 30 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया।

सांयकालीन बालकक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया के निर्देशन में किया गया।

शिविर में आयोजित श्री चौंसठ ऋद्धिविधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री सुशीलकुमार अनिलकुमार प्रदीपकुमारजी रपरिया कोलकाता, श्री दलीचंदजी जवरचंदजी हथाया परिवार घाटाकोपर-मुम्बई, श्रीमती तेजप्रभा मातु श्री कमलकुमारजीबड़जात्या परिवार मुम्बई, स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता थे।

14 अक्टूबर को रात्रि में शिविर का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। शिविर में लगभग 1280 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर लगभग 17322 रुपयों का सत्साहित्य तथा 15480 घंटों के डी.वी.डी. व सी. डी. घर-घर पहुँचे। वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथ प्रदर्शक के अनेक नवीन सदस्य बनें। ●

ढाई द्वीप शि

लान्यास पत्रिका

प्रथम राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का अभूतपूर्व आयोजन

ग्यारहवें आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर के दौरान दिनांक 6 से 11 अक्टूबर तक **जैन अध्यात्म को हुकमचंदजी भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में कुल 13 वक्ताओं ने अपने आलेख प्रस्तुत किये।

प्रथम दिवस ह्न

संगोष्ठी के प्रथम दिन प्रथम वक्ता डॉ. भागचंदजी जैन, कार्डिनेटर ह्न महावीर पब्लिक स्कूल जयपुर ने **भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ ह्न डॉ. भारिल्ल की दृष्टि में** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये डॉ. भारिल्ल के साहित्य को प्रवचनात्मक, शोधपरक व पौराणिक आख्यान के विभागों में व्यक्त किया। आपने बताया कि उक्त कृति अनेक संस्थानों द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। डॉ. भारिल्ल की शैली के संबंध में चर्चा करते हुये आपने कहा कि डॉ. भारिल्ल ने कहानियों के माध्यम से अध्यात्म का प्रतिपादन किया है, आपके साहित्य में सरसता का जो पुट मिलता है, वह अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

आपके पश्चात् द्वितीय वक्ता के रूप में पण्डित प्रमोदकुमार जी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल की कृति **पश्चाताप** को आधार बनाकर **तर्क की कसौटी पर पश्चाताप** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। आपने बताया कि प्रस्तुत खंडकाव्य में विषय के प्रतिपादन के लिये दिये गये तर्क मौलिक, सरस, सकारात्मक व सटीक हैं, आपने तर्कों के माध्यम से जनमानस में समाहित भ्रांतियों को उजागर कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया है। आपके द्वारा प्रयुक्त तर्कों की बहुलता विषय की गंभीरता और सजीवता को प्रगट करती है। प्रस्तुत कृति में पुरातन व अधुनातन न्याय व्यवस्था को आधार बनाकर तर्कों का प्रयोग किया गया है एवं महामानव राम को मानवराम की दृष्टि से दखने का प्रयास किया गया है।

गोष्ठी की अध्यक्षता **डॉ. अनिल जैन – विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय** ने की। उन्होंने अपने उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डालते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल मात्र एक व्यक्ति नहीं है; अपितु वे एक संस्था हैं। वे एक नदी नहीं; अपितु भागीरथ हैं, जो अपने पीछे पूरी गंगा को बहाकर ले जाते हैं।

द्वितीय दिवस ह्न

दिनांक 7 अक्टूबर को गोष्ठी के द्वितीय सत्र का आयोजन डॉ. संजीव जी भानावत ह्न अध्यक्ष, जनसंचार केन्द्र राजस्थान विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में किया गया।

गोष्ठी के इस सत्र में प्रथम वक्ता के रूप में श्री अरुण शास्त्री ने **डॉ. भारिल्ल की कहानियों का प्रतिपाद्य** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल की कहानियों का उद्देश्य कथावस्तु का ताना–बाना लेकर आध्यात्मिक ज्ञान परोसना है। उनकी कहानियों का मूल प्रतिपाद्य अध्यात्म ही है, इसके साथ–साथ ही आपके साहित्य में मनोविज्ञान, दार्शनिक चिंतन, नारी चेतना के स्वर, गूढ़ राजनैतिक चिंतन और नैतिकह्न सामाजिक पहलू भी मुखरित होते हैं। आपने डॉ. भारिल्ल को मूर्धन्य मनीषी व सशक्त लेखक सिद्ध करते हुये कहा कि तत्त्व की प्रतिपादक कहानियाँ आपकी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा है।

द्वितीय वक्ता के रूप में डॉ. नीतेश शाह ने **बारह भावना** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल के काव्य में मात्र भक्ति का पुट ही नहीं है; अपितु आपका काव्य अध्यात्मरस से सराबोर है। उनके द्वारा लिखित बारह भावनायें श्रोताओं का ध्यान बरबस ही आकर्षित कर लेती हैं। आपने कहा कि जहाँ आत्मा के उन्नयन के विकास की बात हो, वही अध्यात्म है और ऐसा अध्यात्म आपकी कृतियों में सहज ही उपलब्ध होता है। डॉ. भारिल्ल का साहित्य मात्र रचनायें नहीं; अपितु अंतर्मन से निकले हुये उद्गार हैं। आपका साहित्य जाति व धर्म के बंधनों से रहित है तथा समाज के लिये उचित मार्गदर्शक हैं।

तृतीय वक्ता के रुप में डॉ. संजयजी दौसा ने **डॉ. भारिल्ल की प्रवचन कला** विषय पर प्रकाश डालते हुये कहा कि वे कलम के साथ ही वाणी के भी धनी हैं, लोकप्रिय साहित्यकार होने के साथ–साथ ही लोकप्रिय प्रवचनकार के रूप में भी सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हैं। डॉ. भारिल्ल श्रोताओं की मनोवैज्ञानिकता के अनुसार बात को समझाने की सामर्थ्य रखते हैं और तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात को सिद्ध करते हैं।

गोष्ठी के इस सत्र के अंत में अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुये डॉ. भानावत ने सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार की विशेषताओं को उजागर करते हुये डॉ. भारिल्ल को सर्वश्रेष्ठ प्रवचनकार के साथ सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार भी सिद्ध किया।

तृतीय दिवस ह्न

गोष्ठी के तृतीय सत्र का आयोजन 8 अक्टूबर को **डॉ. पी. सी. जैन ह्न अध्यक्ष, जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय** की अध्यक्षता में किया गया।

इस अवसर पर प्रथम वक्ता के रूप में डॉ. महावीरप्रसाद शास्त्री ने **डॉ. भारिल्ल का बाल साहित्य** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल ने बालकों में अध्यात्म का बीज बोने हेतु बालबोध, वीतराग–विज्ञान एवं तत्त्वज्ञान पाठमालाओं की रचना की हैं। आपने बालकों को संस्कारित करने हेतु कुल 31 एकांकियों की रचना की, जिनमें से अनेकों को रंगमंच पर प्रदर्शित किया जा चुका है। आपका बाल साहित्य पूर्ण प्रामाणिक है। आपने जैनधर्म के महासिद्धान्तों को बालकों की समझ में आ सकें ऐसे सरलरूप में प्रस्तुत किया है। साथ ही आपने बालकों के विकास हेतु परीक्षा बोर्ड की स्थापना तथा प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन भी किया है।

द्वितीय वक्ता के रूप में पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका–बांसवाड़ा ने **जैन साहित्य में डॉ. भारिल्ल की तार्किक शैली** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुये कहा कि आपके साहित्य में तार्किक विश्लेषण की शैली दृष्टिगोचर होती है। आपने साहित्य के माध्यम से जैनदर्शन को समझने की नई दृष्टि समाज को प्रदान की है तथा सामान्यजन तक अध्यात्म को पहुँचाने में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त की है। आपकी रचनायें चाहे वो गद्य में हो या पद्य में ह्न सभी में आपकी तार्किक शैली दृष्टिगोचर होती है। आपका उद्देश्य मात्र तर्कों का प्रयोग करना नहीं; अपितु तर्कों के माध्यम से अध्यात्म को परोस कर जनमानस में उसकी ढ़ृढता लाना है।

तृतीय वक्ता के रुप में पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी–दमोह ने **पश्चाताप में सीता चरित्र : एक अध्ययन** विषय पर प्रकाश डालते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल के द्वारा मात्र 17 वर्ष के बाल्यकाल में लिखी गई इस कृति में सीता के माध्यम से नारी का चरित्र चित्रण मार्मिक ढंग से किया गया है। पुस्तक का वाचन करने पर विभिन्न छन्दों में सीता के आदर्शनारी, आदर्शपत्नी आदि रूप दिखाई देते हैं। एक ही सीता अपने पति राम को सम्बोधन करते वक्त आदर्श पत्नी के पद पर रहती है और वही सीता राम को बिना सोचे निर्णय करने के कारण अन्यायी घोषित करते समय आदर्श नारी की छवि प्रस्तुत करती है। इस काव्य में वैराग्य और आत्माराधना दोनों को नारी चरित्र का सहारा लेकर प्रस्तुत किया है।

गोष्ठी के अंत में अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुये डॉ. पी.सी.जैन ने कहा कि डॉ. भारिल्ल का चिंतन इतना विस्तृत है कि उनकी एक–एक कृति को लेकर एक–एक संगोष्ठी आयोजित की जा सकती है। साहित्य व वाणी के माध्यम से तत्त्वप्रचार के लिये रत रहने वालों में डॉ. भारिल्ल का नाम सर्वोपरि है।

चतुर्थ दिवस ह्न

संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता **डॉ. पी. सी. रांवका ह्न प्रोफेसर–भाषा विज्ञान, बीकानेर संस्कृत कॉलेज** ने की।

इस सत्र के प्रथम वक्ता के रूप में डॉ. महेश जैन भोपाल ने **डॉ. भारिल्ल का अध्यात्म के क्रियान्वन में योगदान** विषय पर अपना आलेख पत्र प्रस्तुत किया। आपने अपने पत्र में बताया कि किसी भी क्षेत्र में कार्य के सम्पूर्ण सम्पादन व क्रियान्वन की जैसी दृष्टि आपके पास है, वैसी अन्य किसी के पास होना दुर्लभ है। आपकी क्रियाशक्ति को प्रदर्शित करनेवाला आपका साहित्य लोगों की असत्य मान्यताओं को बदलने के लिये मजबूर कर देता है। आपके गद्य व पद्य दोनों ही साहित्य में आपकी आत्माभिव्यक्ति प्रदर्शित होती है।

इसके साथ ही उन्होंने डॉ. भारिल्ल की अनेक कृतियों में चित्रित उनकी कार्यशैली को उपस्थित जन समुदाय के मध्य प्रस्तुत किया। आपने बताया कि आज के समय में घर–घर में सत्साहित्य व स्वाध्याय की उपलब्धता तथा आध्यात्मिक शिविरों के माध्यम से तत्त्व का प्रचार–प्रसार आपकी ही कार्यशैली की देन है।

द्वितीय वक्ता के रूप में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने **नयचक्र में डॉ. भारिल्ल का मौलिक चिंतन** विषय पर अपना शोध आलेख प्रस्तुत करते हुये बताया कि समाज में विरोध का कारण अज्ञान है तथा ऐसे समय में इस अज्ञान को दूर करके ही समाज में एकता लाई जा सकती है ह्न इस एकता के उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही डॉ. भारिल्ल ने **नयचक्र** ग्रंथ की रचना की। आपने बताया कि उक्त ग्रंथ के माध्यम से डॉ. साहब ने समाज में विद्यमान आगम और अध्यात्म के भेद को दूर करने का प्रयास किया है तथा वे इसमें सफल भी हुये हैं। आपने कहा कि डॉ. भारिल्ल की वक्तृत्व व लेखन दोनों ही शैलियों में मौलिकता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। अपने मौलिक विचारों के द्वारा आपने सहज, सरल व व्यवहारिक ढंग से समस्याओं का समाधान किया है।

अंतिम वक्ता के रुप में डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली ने **डॉ. भारिल्ल की रीति–नीति पर महात्मा गाँधी व कानजीस्वामी का प्रभाव** विषय पर प्रकाश डालते हुये कहा कि यद्यपि आपका साहित्य पूर्णरूप से दार्शनिक है, उसका रीति–नीति से कुछ भी सम्बंध नहीं है; परन्तु फिर भी कानजीस्वामी की परम्पराओं अर्थात् रीतियों तथा महात्मा गाँधी के तौर तरीकों अर्थात् नीतियों का प्रभाव आपके साहित्य में अवश्य दिखाई देता है। गाँधीजी व स्वामीजी की भाँति ही आप भी अपने जीवन में सत्य की कीमत पर कभी नहीं झुके। आपके अनुसार वस्तुस्वरूप के सम्यक् निर्णय के लिये सत्य की आवश्यकता है, समझौते की नहीं; वस्तुस्वरूप में समझौते की कीमत पर सत्य नहीं टिक सकता। दोनों महापुरुषों की भाँति आपने भी अपने उपदेश में आध्यात्मिक सत्य की ही स्थापना की है। आपने बताया कि जहाँ आपकी रीति में कानजीस्वामी के कोमलस्पंदन की अनुभूति होती है वहीं आपकी नीति में गाँधीजी की अहिंसामयी कार्यशैली का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है।

गोष्ठी के अंत में अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुये **डॉ. रांवका** ने डॉ. भारिल्ल की कृतियों की प्रशंसा करते हुये वास्तविक अध्यात्म को जन–जन तक पहुँचाने के लिये उनका आभार माना तथा उनके इस कार्य तथा कार्यशैली की प्रशंसा की।

पंचम दिवस ह्न

दिनांक 11 अक्टूबर को संगोष्ठी के पाँचवे व अंतिम सत्र का आयोजन **डॉ. बी. एल. सेठी ह्न अध्यक्ष, इतिहास विभाग, सेठ मोतीलाल कॉलेज, झुंझुनू** की अध्यक्षता में किया गया।

इस सत्र के प्रथम वक्ता के रूप में डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई ने **धर्म के दशलक्षण** कृति पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। द्वितीय वक्ता के रूप में पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने अपने वक्तव्य में कहा कि डॉ. भारिल्ल ने अपने साहित्य के माध्यम से जैन आध्यात्मिक साहित्य के गौरव को बढ़ाया है। डॉ. साहब को टोडरमल स्मारक भवन जैसा प्लेटफॉर्म मिला और उन्होंने इसे अध्यात्म से सराबोर कर दिया। अपने साहित्य के माध्यम से आपने जैन अध्यात्म को अनुपम भेंट दी है। ●

ढाई द्वीप शिल

ान्यास पत्रिका

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 8

तीसरा प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यद्यपि हृदयरोगी खतरनाक झूलों पर नहीं झूल सकते; तथापि यह कहता है मुझे देखना है कि इस झूले पर झूलने से कैसा लगता है? मरना तो एक न एक दिन सबको ही है। इसप्रकार मौत की कीमत पर भी वह झूले पर झूलकर देखना चाहता है।

पर्यटन का सम्पूर्ण व्यवसाय इस देखने-जानने की इच्छा के आधार पर ही चल रहा है। भारतीय लोगों को अमेरिका देखना है और अमरीकी लोगों को भारत देखना है। मात्र देखने-जानने की इच्छा की पूर्ति के लिये हम सम्पूर्ण विश्व के चक्कर लगाते रहते हैं।

अरे भाई ! जब केवलज्ञान हो जायेगा, तब सबकुछ सहज ही जानने में आ जायेगा। इस पर यह कहता है कि जब जानने की इच्छा ही नहीं रहेगी तो जानने का क्या लाभ है?

कैसी विचित्र स्थिति है कि जब हम मौत की कीमत पर सबको एक साथ जान लेना चाहते हैं, देख लेना चाहते हैं; तब तो सबका जानना-देखना होता नहीं है और जब जानने-देखने की इच्छा नहीं रहती, तब सब कुछ एक साथ जानने-देखने में आ जाता है।

एक व्यक्ति प्रतिदिन प्रातः घर के दरवाजे के बाहर चबूतरे पर बैठकर दातुन (दंतमंजन) किया करता था। उसी समय गाँव की गाय-भैसें जंगल में चरने को जाने के लिये निकलती थीं।

उन भैसों में से एक भैंस के सींग विचित्र रूप से टेड़े मेढ़े थे। उन्हें देखकर वह सोचता कि यदि इस भैंस के सींगों में मेरी गर्दन फँस जाये तो क्या होगा? उसकी उक्त जिज्ञासा (जानने की इच्छा) निरन्तर बलवती होती गई और एक दिन ऐसा आया कि उसने अपनी गर्दन उक्त भैंस के सींगों में स्वयं फँसा ली। इस अप्रत्यासित स्थिति के लिये भैंस तैयार न थी; अतः वह विचक गई और भाग खड़ी हुई।

अब जरा विचार कीजिए कि तब क्या हुआ होगा?

हुआ क्या होगा, वह व्यक्ति अस्पताल पहुँच गया, आपात- कालीन कक्ष में प्रविष्ठ हो गया। उसकी हालत अच्छी न थी। उसके इष्ट-मित्र उसे देखने के लिये अस्पताल पहुँचे और उससे पूँछने लगे कि यह सब कैसे हो गया? तब कराहते हुये वह कहने लगा कि मेरी गर्दन भैंस के सींगों में फँस जाने से वह भड़क गई और यह सब कुछ हो गया। तब लोगों ने पूँछा कि आखिर यह हुआ कैसे?

तब वह कहने लगा। हुआ कैसे, यह जानने के लिये कि ऐसा होने पर क्या होगा ह्न मैंने ही अपनी गर्दन उसके सींगों में फँसाली थी।

उसकी यह बात सुनकर लोग कहने लगे कि ह्न अरे भाई! गर्दन फँसाने के पहले कुछ सोचना तो चाहिये था। तब बड़ी ही मासूमियत से वह कहने लगा कि मैंने थोड़ा-बहुत नहीं, लगातार छह माह तक सोचा था; इस स्थिति को जानने की जिज्ञासा जब इतनी तीव्र हो गई कि मेरे से नहीं रहा गया; तब मैंने स्वयं ही अपनी गर्दन भैंस के सींगों में फँसाली।

अरे भाई ! यह तो मात्र उदाहरण है; सच्ची बात तो यह है कि हम सभी इसीप्रकार जानने-देखने के लोभ में निरन्तर अपनी गर्दन फँसाये चले जा रहे हैं। मौत की कीमत पर भी समुद्र की तलहटी में चले जाते हैं, आकाश में अपने करतब दिखाते हैं और न मालूम क्या-क्या करते हैं ? **(क्रमशः)**

समयसार का शिखर पुरुष

(राष्ट्रसंत सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने प्रख्यात दार्शनिक विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को पत्र द्वारा अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया है। हम यहाँ उनके पत्र को अविकलरूप से प्रकाशित कर रहे हैं। ह्न प्रबन्ध सम्पादक)

'प्रकृष्टेन तीर्थंकरेण आभृतं प्रस्थापितम् इति प्राभृतं प्रकृष्टैराचार्यै र्विद्यावित्तवद्भिराभृतं धारितं व्याख्यातमानीतमिति वा प्राभृतम्।'

ह्न जयधवला, पुस्तक १, पृष्ठ १२१

***अर्थ ह्न** जो प्रकृष्ट तीर्थंकरों द्वारा स्थापित है अथवा विद्याधन से संपन्न प्रकृष्ट आचार्यों द्वारा धारित, व्याख्यात और आनीत है, उसे प्राभृत कहते हैं।*

धर्मानुरागी विद्वद्वर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल !

समयसार वाचना में आपके समयसार व्याख्यान सुनकर हृदय बहुत ही गद्गद् हो गया और उससे बहुत धर्मलाभ भी प्राप्त हुआ। मुझे तो ऐसा लगता है कि जैनदर्शन का मर्म 'समयसार' में भरा है और 'समयसार' का व्याख्याता आज आपसे बढ़कर दूसरा नहीं है। आपको इसका बहुत गूढ़-गम्भीर ज्ञान भी है और उसके प्रतिपादन की सुन्दर शैली भी आपके पास है।

यदि आपको ***'समयसार का शिखर-पुरुष'*** भी आज की तिथि में घोषित किया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आपने आज के समय में जब एक-दो बच्चों को भी पालना (संस्कारित करना) बहुत कठिन है, सैकड़ों बालकों को जैनदर्शन का विद्वान बनाकर भी समाज की महती सेवा की है, जो **इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों** में लिखी जाती रहेगी।

आप चिरायु हों, स्वस्थ रहें और जैनधर्म की महान प्रभावना करते रहें तथा सम्पूर्ण समाज भी एकजुट होकर आपके प्रवचनों को बड़ी सद्भावना से सुनकर लाभान्वित होती रहे ह्न यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

आशीर्वाद

(ह्न आचार्य विद्यान्द मुनि)

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का प्रथम अधिवेशन सम्पन्न

ग्यारहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर के दौरान रविवार, दिनांक 9 अक्टूबर को कार्यकारिणी की बैठक एवं **पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन** दो सत्रों में सम्पन्न हुआ।

दोपहर में आयोजित इस सभा का विधिवत् उद्घाटन इन्दौर से पधारे मुख्य अतिथि श्री मुकेशकुमारजी जैन के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमान सुरेशचंदजी बालचंदजी पाटनी कोलकाता के अतिरिक्त अन्य अनेक विशिष्ट अतिथि मंचासीन थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ पण्डित मनीषजी शास्त्री पिडावा के मंगलाचरण से हुआ। मंचासीन अतिथियों के स्वागत के बाद पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् **ट्रस्ट** के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने स्नातक परिषद् के गठन की आवश्यकता/उद्देश्य/स्वरूप पर प्रकाश डालते हुये कहा कि ह्न

पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से संचालित महाविद्यालय का संचालन 1977 से प्रारंभ हुआ था और इसे चलते हुये आज 31 वर्ष हो गये हैं। अब तक इसके 27 बैच के लगभग 550 छात्र निकलकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इन सब में परस्पर संवाद स्थापित हो, सभी परस्पर मिलकर तत्त्वप्रचार के कार्य में अधिक से अधिक योगदान कर सकें ह्न इस उद्देश्य से इस संस्था का गठन किया गया है।

यह संस्था यूनियनों की भाँति अपने हितों का ध्यान रखने की बजाय समाज में तत्त्वप्रचार के कार्यों को गति देने के लिये प्रयासरत रहेगी। आपने आगे कहा कि तत्त्वप्रचार के कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका विद्वान ही निभाते हैं। अत: विद्वानों की इस स्नातक परिषद् का उद्देश्य तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार करना ही है। हम इसके माध्यम से किसीप्रकार का कोई अनुशासन-प्रशासन नहीं करना चाहते।

इस अवसर पर आपने सभी छात्रों को वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथ प्रदर्शक का नि:शुल्क सदस्य बनाने की घोषणा की; ताकि सभी छात्रों से संवाद स्थापित करना सुलभ रहे और और कहा कि भविष्य में सभी पत्राचार इन्हीं पत्रों के माध्यम से किये जायेंगे। साथ ही संस्था द्वारा समय-समय पर प्रकाशित साहित्य भी छात्रों को नि:शुल्क भेजा जायेगा।

तत्पश्चात् नवगठित प्रथम कार्यकारिणी को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा शपथ ग्रहण कराई गई।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुये परिषद् के उपाध्यक्ष श्री प्रदीपकुमारजी झाँझरी ने इस परिषद् की स्थापना को महाविद्यालय की स्थापना जैसी ही अद्भुत् एवं युगान्तरकारी घटना बताया। उपाध्यक्ष श्री मुकेशजी तन्मय विदिशा ने भी अपने उद्बोधन में इस घटना को चिरप्रतीक्षित आवश्यकता की पूर्ति के रूप उठया गया एक महत्त्वपूर्ण कदम बताते हुये कहा कि इस संस्था के गठन के दूरगामी सार्थक परिणाम होंगे। पण्डित राजकुमारजी बाँसवाड़ा ने डॉ. भारिल्ल के मार्गदर्शन में गठित इस परिषद् के माध्यम से महाविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थियों के रिफेसर कोर्स एवं विषय केन्द्रित शिविरों के आयोजन का प्रस्ताव रखा।

इनके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, डॉ. महावीरजी उदयपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल मुम्बई, श्रीमती स्वानुभूति जैन मुम्बई, डॉ. महेशजी जैन भोपाल, पण्डित राजीवजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, श्री ऋषभजी शाह अहमदाबाद, डॉ. विमलजी जैन जयपुर, डॉ. भागचंदजी जैन जयपुर, पण्डित सुशीलकुमारजी भोपाल, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर इत्यादि वक्ताओं ने दो सत्रों में अपने विचार व्यक्त किये।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने कहा कि डॉ. साहब के चिंतन में जो भी योजना जन्म लेती है, वह अत्यंत दूरगामी एवं उपयोगी होती है। इस परिषद् की गतिविधियों और उद्देश्यों के बारे में भी उन्होंने कोई ठोस कल्पना की होगी।

मैं स्नातक परिषद् के सदस्यों से अपेक्षा रखता हूँ कि वे पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनों पर एवं डॉ. साहब द्वारा विरचित समयसार, प्रवचनसार की टीकाओं पर आधारित परिचर्चा, तत्त्वगोष्ठी आदि का आयोजन करें। मेरी हार्दिक भावना है कि प्रत्येक सदस्य जिनागम का गहन अध्ययन, मनन द्वारा स्वानुभूति का पुरुषार्थ करे। मैं सभी भूत, वर्तमान एवं भावी स्नातकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

कार्याध्यक्ष शांतिकुमारजी पाटील ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिसप्रकार हाथ की सभी अंगुलियाँ बराबर नहीं होती, लेकिन मुट्ठी बांधने में और उसकी मजबूती में प्रत्येक अंगुली का अपनी योग्यतानुसार पूर्ण योगदान रहता है; उसीप्रकार हम सभी की योग्यता एक सी नहीं हो सकती है, लेकिन हम सभी यदि अपनी योग्यतानुसार योगदान देंगे तो निचित ही यह संगठन मजबूत होगा और अपने तत्त्वप्रचार के उद्देश्य में सफल हो सकेगा।

इस अधिवेशन हेतु लगभग 225 स्नातक विद्वानों की उपस्थिति से पूरे परिसर में उत्साह का वातावरण था।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन परिषद् के महामंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। ●

महाविद्यालय का सुयश

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र **जयेश जैन उदयपुर** ने राजस्थान बोर्ड की उपाध्याय वरिष्ठ (12वीं) परीक्षा में मैरिट में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस उपलक्ष में संस्कृत दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में **शिक्षामंत्री श्री कालीचरण सर्राफ** एवं शिक्षा राज्यमंत्री श्री वासुदेव देवनानी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

महाविद्यालय परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई !

17 अक्टूबर 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

३० वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

ग्यारहवें शिक्षण-शिविर के दौरान रविवार, दिनांक 12 अक्टूबर को **अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 30वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया गया।**

अधिवेशन का उद्घाटन श्री श्रेयांसकुमारजी कोलकाता ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री कपूरचंदजी डैडी भोपाल थे। अध्यक्षता फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलभाई कांतिभाई मोटानी मुम्बई ने की, वे फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के पश्चात् पहली बार जयपुर पधारे। इस अवसर पर उनका विशेष स्वागत किया गया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कैलाशचंदजी सेठी जयपुर, फैडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष श्री आदीशजी जैन, श्री रजनीभाई लाखानी राजकोट, श्री मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर, श्री सुरेशजी बालचंदजी पाटनी कोलकाता, श्री अशोकजी कोलकाता, श्री दिलीपभाई अहिंसा चैरिटेबल ट्रस्ट आदि उपस्थित थे।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल आदि समस्त विद्वान भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्री उत्तमचन्दजी भारिल्ल अजमेर ने भी सभा को संबोधित करते हुये कोटा के संभागीय अधिवेशन एवं किशनगढ में किये गये एक दिवसीय फैडरेशन कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर की जानकारी प्रदान देते हुये इसे सभी प्रदेशों को अपनाने की प्रेरणा दी।

राजस्थान प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने उदयपुर संभाग द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में बताते हुये दीपावली को अहिंसा पर्व के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा। इसे उपस्थित जन समुदाय ने करतल ध्वनिपूर्वक स्वीकार कर लिया। इसके फार्म का विमोचन डॉ. भारिल्ल के कर-कमलों से हुआ।

संगठन मंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने दिसम्बर माह मे आयोजित होनेवाली बुन्देलखण्ड यात्रा की जानकारी दी तथा श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने फैडरेशन को 21वीं सदी की आधुनिक तकनीकों से जोडने की बात करते हुये शिक्षण पद्दति की अनेक नवीन योजनाओं की जानकारी दी, जिन्हें वे मुम्बई महानगर में सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं।

राजस्थान प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जयपुर प्रभारी श्री संजीवकुमारजी गोधा ने जयपुर महानगर में चल रही फैडरेशन की गतिविधियों की जानकारी दी। भिण्ड से पधारे श्री पुष्पेन्द्रजी जैन ने ग्रुप शिविरों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर परामर्शदाता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने फैडरेशन के सदस्यों को अपने तत्त्वप्रचार-प्रसार पूर्वक आत्मानुभूति के लक्ष्य को सदैव स्मरण रखने की बात पर बल दिया।

अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुलभाई मोटानी, मुम्बई ने सभी कार्यकर्त्ताओं का आभार मानते हुये फैडरेशन को और अधिक सक्रिय बनाने का आह्वान किया।

डॉ. भारिल्ल ने अधिवेशन में पूरे देश से पधारे सभी कार्यकर्त्ताओं को फैडरेशन द्वारा चलाये जा रहे ज्ञानयज्ञ में जुडने हेतु अपना आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने किया।

दीपावली को मनायें अहिंसा पर्व...

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश द्वारा श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित फैडरेशन के 30 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रकाश पर्व दीपावली को **अहिंसा पर्व** के रूप में मनाने की घोषणा की।

दीपावली पर्व के अवसर पर 2 से 16 वर्ष तक के जो भी बालक-बालिकायें पटाखे नहीं छुड़ायेंगे, उन्हें जिला स्तर पर पुरस्कृत किया जायेगा। इसके लिये उन्हें पटाखे नहीं छुड़ाने हैं ह्न इस आशय का शपथ पत्र भरकर अपने अभिभावक/पड़ौसी द्वारा सत्यापित करवाकर शाखा कार्यालय में जमा करवाने होंगे।

फैडरेशन की अन्य इकाइयाँ भी इस तरह से आयोजन करवा सकती हैं। इसकी विस्तृत जानकारी के लिये श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री, उदयपुर से **09414264013** पर एवं पटाखे विरोधी पोस्टर के लिये श्री विरागजी शास्त्री, जबलपुर से **09373294684** पर संपर्क कर सकते हैं।

कोटा संभाग द्वारा तीर्थयात्रा

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन कोटा संभाग दिनांक 24 से 30 अक्टूबर, 08 तक अनेक तीर्थक्षेत्रों की यात्रा का आयोजन कर रहा है। यात्रा दिनांक 24 अक्टूबर को कोटा से बस द्वारा प्रारंभ होगी तथा 25 अक्टूबर को भोजपुर दर्शन के पश्चात् समसगढ़ होते हुये रात्रि में नागपुर विश्राम करेगी। दिनांक 26 अक्टूबर को रामटेक, भातकुली आदि स्थानों से होते हुये कारंजा में विश्राम करेगी। दिनांक 27 अक्टूबर को अंतरिक्ष पार्श्वनाथ होते हुये मुक्तागिरी पहुँचेगी।

मुक्तागिरि में दिनांक 28 से 30 अक्टूबर तक एक **वैराग्य प्रेरक शिविर** अनेक प्रतियोगिताओं के साथ आयोजित किया जायेगा। वहाँ पधारनेवाले सभी शिविरार्थियों के आवास एवं भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था रहेगी।

सभी को पधारने हेतु हमारा भावभीना हार्दिक निमंत्रण है।

सम्पर्क-सूत्र : जयकुमार जैन-**09414310096**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127